International Journal of Sanskrit Research 2024; 10(2): 75-78

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2024; 10(2): 75-78
© 2024 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 13-01-2024
Accepted: 17-02-2024

भानु गोस्वामी
शोधार्थी, संस्कृत विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
भानु गोस्वामी
शोधार्थी, संस्कृत विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर, राजस्थान, भारत

श्रीमद्भगवदाचार्यकृत भारत पांरिजातम् में छंद योजना

भानु गोस्वामी

प्रस्तावना

भारतपारिजातम् महाकाव्य में छन्द

छन्दों की दृष्टि से भारतपारिजताम् महाकाव्य उत्कृष्ट महाकाव्य है। जिसमें कवि ने विभिन्न छन्दों का प्रयोग किया है– बंशस्थ, मालिनी, इन्द्रवज्रा, प्रदर्षिणी, अनुष्टुप्, वसन्ततिलका, उपजाति, वियोगिनी, मन्दाक्रान्ता, द्रुतविलम्बितम्, मालती, रथोद्धता, शिखरिणी, सत्रग्धरा, शार्दूलविक्रीडितम् आदि। भारतपारिजातम् महाकाव्य में भगवादाचार्य ने वर्णिक मात्रिक दोनों छन्दों का प्रयोग किया है।

(1) वंशस्य छनद

जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ।[1]

अर्थात् वंशस्य छंद में चतुष्पाद होते हैं। प्रत्येक पाद में 12 वर्ण होते इस इस प्रकार चारों पादो में 48 वर्ण होते हैं। प्रत्येक पाद मे क्रमशः जगण, तगण, जगण, रगण होते है। विवेच्य महाकाव्य में वंशस्थ छन्द के निम्न पद्य दृष्ट्व्य है –

निवारितो द्वारजनेन दीनवाक्सवेपथुर्विप्रवरो जगाद तम्।
सुदामना माहमनन्तवैभवं द्विजो दिद्क्षे हरिमर्तिनाशकम्।।[2]
कदापि नोत्कोचमयं महाजनः कुतोऽपिकेनापि पथा गृहीतवान्।
मितम्पचत्वं न पुपोष तेन नो स संचिकायार्थनिधिं यद्च्छया।।

प्रस्तुत दोनो उदाहरण वंशस्य छंद के लक्षणानुसार घटिते हो रहे है। अतः यहाँ वंशस्य छंद है।[3]

(2) मालिनी छन्द

ननमययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।[4]

अर्थात् मालिनी छन्द के प्रत्येक पाद में 15 वर्ण होते हैं तथा क्रमशः नगण दो, एक मगण, दो यगण, 8 तथा 7 वे वर्ण पर यति होती है। उक्त लक्षण निम्न श्लोको में दृष्ट्व्य है।

निखिलभुवनसारं श्रोतसन्दर्भसारं,
रिपुमथनविसारं योगिनांकण्ठहारम्।[5]

प्रहसितदशनाभासंहृतध्वान्तरधारं,
कमपि च तमकस्भांदागतं सा ददर्श।।[6]

विकसितमुखपद्मा पुत्तली कान्तकान्ती,
रघुपति पद पद्म प्रत्तदृष्टिर्निषण्णा।
हृदयपटलजातानर्गल प्रेमसिन्धे,
प्रभुगमनमजानान्नैव मग्ना तदानीम्।।[7]

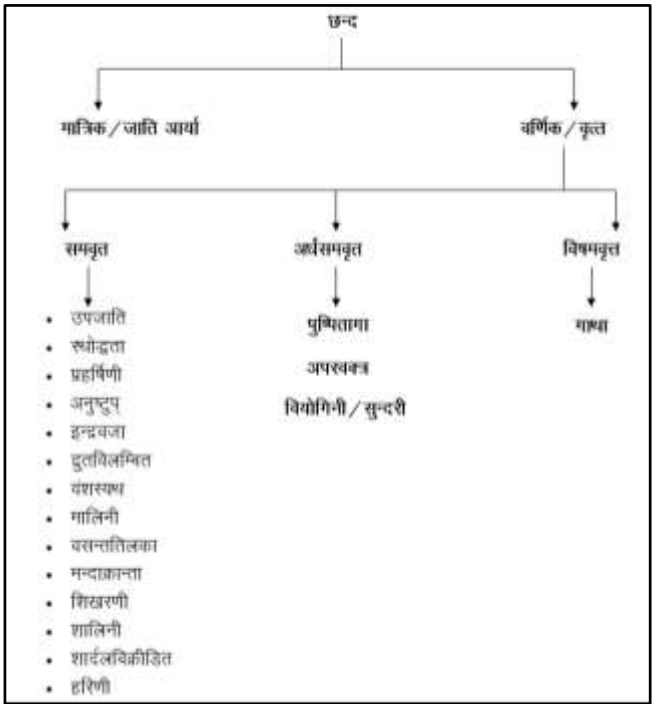

(3) इन्द्रवज्रा छन्द

स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः।
अर्थात् इन्द्रवज्राछन्द के प्रत्येक पाद में 11 वर्ण होते हैं तथा क्रमशः तगण, तगण, जगण और अन्त में दो गुरु वर्ण होते है।

केनापि पुण्येन पुरार्जितेन श्रीकर्मचन्द्रो महतां महीयान्।
आपत्पितृत्वं स्पृहणीयमेवं मर्त्यैस्तथा निर्जरसां समाजैः।।[8]

प्रस्तुत पद्य में 11 वर्ण है तथा यह क्रमशः तगण, जगण और दो गुरु वर्ण है अतः यहाँ इन्द्रवज्रा छंछ है।

(4) अनुष्टुप्

श्लोके षष्ठं गुरुज्ञेयं सर्वत्र व्यद्यु पंचमम्।
द्विचतुष्पादयोः ह्रस्वम् सप्तमं दीर्घमन्ययोः।।[9]

अर्थात् अनुष्टुप छन्द के प्रत्येक चरण में 8 वर्ण होते है तथा छन्द के सभी पादों में पंचम अक्षर लघु तथा षष्ठ अक्षर सदैव गुरु होता है। द्वितीय और चतुर्थ चरण में सप्तम् वर्ण सदैव लघु तथा प्रथम तृतीय चरण में सप्तम् वर्ण सदैव गुरु होता है। भारतपारिजातम् महाकाव्य के तीसरे सर्ग में निम्न पद्य अवलोकनीय है –

वसताऽथ सता तेन यरोड़ा बन्दिमन्दिरे।
मासाः कतिपये शान्तं निन्यिरे शान्तिमूर्तिना।।[10]

प्रस्तुत श्लोक के प्रत्येक चरण में आठ वर्ण है इसके सभी पादों में पाँचवा अक्षर लघु तथा छठा अक्षर गुरु है। दूसरे तथा चौथे चरण में सातवा वर्ण लघु तथा पहले तथा तीसरे चरण में सातवा वर्ण गुरु है अतः इस श्लोक में अनुष्टुप छंद है।

5. वसन्ततिलका छन्द

उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।[11]

अर्थात् चतुष्पाद वसन्ततिलका छन्द के प्रत्येक पाद में 14 वर्ण होते है क्रमशः 1 तगण, 1 भगण, 2 जगण व 2 गुरु होते है। उक्त लक्षण की दृष्टि से निम्न पद्य दृष्टव्य है –
अन्याथ्य एव पथि संचरणं कुराज्यं, श्रेयस्कृदित्यथविचार्य विचारहीनम्
देयो भविष्यति करो नृपते रिदानी।
मित्यार्त ह्रद्भयकरीं निरमादनुज्ञाम्।।[12]

प्रस्तुत पद्य में क्रमशः तगण, भगण, दो जगण व दो गुरु के क्रम से 14 वर्ण है अतः बंसन्ततिलका छंद है।

(6) उपजाति

अनन्तरोदीरित लक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावपुजातयस्ताः।[13]

अर्थात् उपजाति के चतुष्पाद के प्रत्येक चरण के 11 वर्ण होते हैं तथा कुल 44 वर्ण होते है। यह छन्द इन्द्रवज्रा व उपेन्द्रवज्रा छन्द के संयोग से निर्मित है। इस छन्द में कोई दो पद इन्द्रवज्रा एवं कोई दो पद उपेन्द्रवज्रा छन्द के लक्षणों से युक्त होते है। उपर्युक्त लक्षणानुसार निम्न पद्य दृष्ट्व्य है –

तीरे स्त्रवन्त्याः खलुः साभ्रमत्याः शुद्धे सदाऽपां निश्चयं दधत्याः।
सदा सदाचारविचारशुद्धया उद्घाटितश्चाश्रम एष तेन।।[14]

मन्दाक्रान्ता छन्द

मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनर्गे र्मोभनौ तो गयुग्मम्।[15]

अर्थात् मन्दाक्रान्ता छन्द के प्रत्येक चरण में 17 वर्ण होते है तथा क्रमशः मगण, भगण, नगण, तगण, गुरु, गुरु तथा 4,6,7 वें वर्ण पर यति होती है निमन पद्य लक्षणानुसार है।

आसीत्तस्य प्रथमदिवसे यानमङ्गोऽसलाल्यां।
कर्तव्यस्त्तदभिवदनः सेनया सम्परीतः।।
वाचादृष्टया प्रतिपद्मयागण्यलोकानशोकान्।
कुर्वञ्श्रीमत्परमयमिराट् लङ्गनम प्राप सुस्थः।।[16]

श्री महात्माजी प्रथम दिन असलाली गाँव में पड़ाव डालना था अतः अपनी सेना के साथ ही उधर चल दिय। मार्ग में सर्वत्र अगणित लोग खडे थे। सबको वाणी और दृष्टि से शान्त करते हुए परमसंयमी महात्माजी सुखपूर्वक पड़ाव में असलाली ग्राम में पहुँच गये।

द्रुतविलम्बितम् छन्द

द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ[17]

द्रुतविलम्बित छन्द के प्रत्येक पाद में 12 वर्ण होते है। इस प्रकार चारों पादों में 48 वर्ण होते हैं। इस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, भगण, भगण एवं रगण प्रयुक्त होते है। महाकाव्य का निम्न श्लोक लक्षणानुसार है।

इति विचार्य तदार्यह्रदालयेपरमशोकविलोककितभावना।
समुदिताऽविदितावधिके रित वियोग विपत्तिदवनानले।।[18]

ऐसा विचारकर उन श्रेष्ठ जनों के ह्रदय मन्दिर में जिसमें कि अधिक उत्पन्न वियोग दुःखदावानल पहले से ही सुलग रहा था और कब तक सुलगेगा, ऐसा जिसकी अवधि नहीं थी परमशोक युकत भावना उदय हुई।

शार्दूलविक्रीडितम छन्द

सूर्याश्वैर्मसजास्तताः सगुखः शार्दुलविक्रीडितम्।[19]

शार्दूलविक्रीडित छन्द के प्रत्येक चरण में 19 वर्ण होते है तथा क्रमशः मगण, सगण जगण, सगण, 2 तगण तथा एक गुरु होता है एवं 12 व 7 पर यति होती है। उपर्युक्त लक्षण के अनुसार निम्न उदाहरण दृष्टव्य है।[20]

इदं पत्त्रं श्रीमान्सु भगपदनिष्ठं लिखित्वा क्षेणेन।
प्रहेष्यामि श्रेयः प्रतिनिधिसमीपे धरापो विधातुम्।।
इति ध्यात्वा देवः कथमपि च सुप्तो निशीथे मनुष्यैः।
समायातैभौपैर्यतिपतिरयं बन्दितां नीत एव।।[21]

आकर्ण्यैतमनिष्टमिष्ट मथवा वृत्तान्तमेतेऽखिलाः।
सेनावीरवराः सपद्यभिययुस्तत्सन्निधे सत्यपाः।।
पूजान्ते प्रणतिं विधाय सकलास्तत्पादपद्मेऽनमन्।
गायन्तो गमयाम्बभूवुरथ तं गीति च तस्य प्रियांम्।।[22]

इस अनिष्ट अथवा इष्ट समाचार को सुनकर सब सैनिक शीघ्र ही वहाँ आ गये। सब ने पूजा के पश्चात् उनके चरणों में प्रणाम किया और उनके प्रिय गीत को गाते हुए सब ने उन्हें बिदा किया।
प्रस्तुत पद्यों के प्रत्येक चरण में 19 वर्ण है 12 तथा 7 वे वर्ण पर यति हो रही है तथा ये क्रमशः मगण, सगण, जगण सगण 2 तगण तथा एक गुरु है अतः इसमें शार्दूलबिक्रीडितम छंद है।

प्रहर्षिणी छंद

म्रौ ज्रो गस्त्रिदशयतिः प्रहर्शिणीयम्[23]

प्रहर्षिणी के प्रत्येक चरण में मगण, नगण, जगण, रगण और अन्तिमाक्षर गुरु के क्रम से 13 अक्षर होते है तीसरे व दसवें अक्षर पर यति होती है।

आकर्ण्य श्रुतिसुखदां प्रवृत्तिमिष्टां।
तत्काले सुख भर विस्मृतस्व कोडसौ।।
श्री गांधी श्रियमधिकां कबाव्यतारी।
दाहूय द्रुतमतिदीनरूग्ण लोकान्।।[24]

प्रस्तुत पद्य में 13 अक्षर है तथा इसके प्रत्येक चरण में मगण, नगण, जगण, रगण और गुरु के क्रम से है तीसरे दसवें अक्षर पर यति हो रही है अतः यहाँ प्रदर्षिणी छंद का उदाहरण है।

वियोगिनी छंद

विषमे ससजा गुरुः समे, सभरा लोडथ गुरुर्वियोगिनी।[25]

इस वृत्त को सुन्दरी भी कहते है। यह अर्धसम वृत्त है इसमें एक और 3 पाद में 10 वर्ण होते है क्रमशः 2 सगण, 1 जगण, 1 गुरु। दूसरे व चौथे पाद में 11 वर्ण होते हैं वे क्रमशः सगण, मगण, रगण, 1 लघु व 1 गुरु होते है।

इसका भारतपारिजातम् महाकाव्य में निम्न उदाहरण दृष्ट्व्य है –
बहुधा परिपीड़यन्ति ते सकलान्कर्मकरानमी मुधा।

वि विविधा पदपांनिधे जनान्पतितान्पाहि परार्थ जीवित्।।[26]
प्रथमं च महात्मा गतः सचिवः श्वेत शरीरधारिणाम्।

परिरक्षितुमर्तितो जनान्करणीया करणीय बोधनात्।।[27]

उपर्युक्त दोनों पद्य में वियोगिनी छंद के लक्षण पूर्ण घटिता होते है अतः यहाँ वियोगिनी छंद है।

रथोद्धता छंद

रान्नराविह रथोद्धता लगौ।[28]

अर्थात् रथोद्धता छंद में 11 वर्ण होते है जो क्रमशः रगण, नगण, रगण, लघु तथा गुरु है। कवि ने इस महाकाव्य में इस छंद का प्रयोग किया है –

जग्मुरेव सकला इतस्ततो, दर्शनाय यतिमेदिनीपतेः।
दीन दुःखहरणक्षमः प्रभुः सोऽप्यमुच्यत च बन्दिबन्धनात्।।[29]

इधर उधर से सब लोग यतिराज महात्मा जी के दर्शन के लिये वहाँ गये और दीन दुःखहरण वह महात्माजी भी जेल से छोड़ दिये गये।
प्रस्तुत श्लोक में 11 वर्ण है जो क्रमशः रगण, नगण, रगण तथा लघु और गुरु है। अतः इस पद्य में रथोद्धता छन्द के लक्षण घटित हो रहे है।

शिखरिणी छनद

रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी

इस छंद के प्रत्येक चरण में 17–17 वर्ण होते है तथा रस (छठे) और रुद्र (11वें) वर्ण पर यति का विधान होता है। इसमें क्रमशः यगण, मगण, नगण, भगण, सगण तथा एक लघु और एक गुरु होता है यथा –

न देशो नो कालो न हि कमपि वस्तु स्तुतमपि।
व्यवच्छेत्तुं तत्वं प्रभवति च यन्नि त्यमजडम्।।
तदेवाऽनात्मज्ञा उपलकलाकल्पित गृहे, यरोडाख्ये ग्रामेऽमनिषत निबद्धम् जडधियः।।

प्रस्तुत श्लोक के प्रत्येक चरण में 17–17 वर्ण है छठे और 11 वे वर्ण पर यति हो रही है तथा इसमें क्रमशः यगण, मगण, नगण, सगण, भगण तथा एक लघु और एक गुरु है अतः इसमें शिररिणी छंद है।

मञ्जुभाषिणी छंद

सजसा जगौ भवति मञ्जुभाषिणी।।[30]

सगण, जगण, सगण–जगण हो और अन्त में एक गुरु हो तो उसे मञ्जुभाषिणी नामक वृत्त कहते है। इसमें पाँच और आठ अक्षरो के बाद विराम होता है।
भारत परिजातम् महाकाव्य के पच्चीसवे सर्ग में मञ्जुभाषिणी छन्द वर्णित है उदाहरण दृष्टव्य है।

वसुधाधिपत्वमथ कामितं न चेन्न समीहितं सुरपतित्वयहो।
स तदाश्रमाधिपतितां कथं मुनिश्चिर मावहेत निजबन्धनं परम्।।[31]
अयमात्मवाञ्छितपदं यथा सुखं, पदयोरघश्च कुरूतादितीच्छया।
उपगम्य तत्र जलदागमो यति जलसेचनेने शिशिरं सदा व्यधात्।।[32]

प्रस्तुत पद्यों में सगण, जगण, सगण, जगण तथा अन्त में एक गुरु है तथा इसमें पाँचवे तथा आठवें अक्षरों के बाद विराम हो रहा है अतः यहाँ मञ्जुभाषिणी छंद है।

कुसुमविचित्रा छंद

नय सहितौ न्यौ कुसुमविचित्रा।

जिस छन्द में पहले नगण और यगण हो और बाद में भी यही क्रम हो तो उसे कुसुमविचित्र कहते है। इस छंद में पादान्त याति होती है।

जगदभिरामे गतवति पारं, महति जनौघे भवति निमग्ने।
प्रशमिनि तस्मिन्भरूचमनुष्या,
निभ्वनानि प्रययुय धीरः,
निजभवनानि प्रययुरधीराः।।

महाजितेन्द्रिय वह श्री महात्मा जी जब पार पहुँच गये और भारी भीड़ में छिप गये तब भरूच निवासी अधीर होकर अपने अपने घर चले गये।[33]

प्रस्तुत पद्य में पहले नगण और यगण तथा पश्चात् भी यही क्रम है तथा पादान्त यति हो रही है अतः यहाँ कुसुमविचित्रा छंद है।[34]

मत्तमयूर छंद

वेदै रन्ध्रैम्तौ यसगा मत्तमयूरम्।

जिस छंद में मगण, तगण, यगण, सगण तथा अन्त में एक गुरु हो, उसे मत्तमयूर नामक छंद कहते हैं। इसमें वेद चार और रन्ध्र नव अक्षरों के बाद विराम होता है। भारत पारिजातम् महाकाव्य के पंचविश (25) सर्ग में कवि ने महात्मा जी की तपस्या का वर्णन किया है।

देशोद्धारार्थी यतिराजस्तपसैवं
सन्तोष्यात्मानं परमं सत्यमहीन्द्रः।
सम्प्राप्य स्वल्पान्परिगृहयानधिकारा।
न्निः शेषान्प्राप्तुं तपसीद्धे निरतोऽस्ति।।

देशोद्धार की इच्छावाले महात्माजी तपस्या से अपने को सन्तुष्ट करके मिलने वाले अधिकारों में से थोड़ेसे राजनीतिक अधिकार प्राप्त करके सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त करने के लिये अभी महान् तप में बैठे हुए है।[35]
प्रस्तुत पद्य में मगण, तगण, यगण, सगण तथा अन्त में एक गुरु है तथा चार वेद और रन्ध्र नवमें अक्षरों के बाद विराम है। अतः यहां मल्तमयूर छंद है।[36]

स्त्रग्धरा छन्द

मुभ्नैर्यानां क्रमण त्रिमुनियतियुता स्त्रग्धराकीर्तितेयम्।

जिस छन्द के मगण, रगण, भगण, नगण तथा अन्त में तीन यगण हो उसे स्त्रग्धरा नामक छन्द कहते हैं। इसमें मुनि अर्थात् सात, सात अक्षरों पर तीन बार विराम होता है।
भारत पारिजातम् महाकाव्य के चौबीसवें सर्ग में आया हुआ उदाहरण प्रस्तुत है।

भेत्ता यः सर्वबन्धव्यतिकरनिकरस्यापि सच्चित्स्वरूपो
मुक्ति प्राप्यैव दैहीप रिह्हततनु तादात्म्यमोक्षैकरूपः।
सर्वैः काम्यः कृपालुः कतिचिदपि दिनान्येष वासं विधातुं
यातः श्री प्रेमलीला भवनमनुपदं चाधिपूनं परात्मा।।

प्रस्तुत पद्य में मगण, रगण, भगण, नगण तथा अन्त में तीन यगण है तथा इसमें मुनि अर्थात् सात सात अक्षरों पर तीन बार यति हो रही है। अतः इस पद्य में स्त्रग्घरा छंद है।

संदर्भ

1. छन्दोमंजरी द्वितीय स्तबक, पृ. 46,51
2. भारतपारिजातम् 1/27, पृ. 7
3. भारतापारिजातम् 1/44, पृ. 11
4. छन्दोमंजरी द्वितीय स्तबक, पृ. 65
5. छन्दोमंजरी, 1/5
6. भारतपारिजातम् 1/52, पृ. 13
7. भारतपारिजातम् 1/55, पृ. 14
8. भारतपारिजातम् 1/40, पृ. 24
9. छन्दोमंजरी द्वितीय स्तबक, पृ. 65
10. भारतपारिजातम् 24/1, पृ. 375
11. द्वितीय स्तबक, पृ. 65
12. छन्दोमंजरी द्वितीय स्तबक, पृ. 65
13. छन्दोमंजरी द्वितीय स्तबक, पृ. 35
14. छन्दोमंजरी द्वितीय स्तबक, पृ. 35
15. भारतपारिजातम् 6/2, पृ. 65
16. भारतपारिजातम 13/44, पृ. 194
17. छन्दोमंजरी द्वितीय स्तबक, पृ. 51
18. छन्दोमंजरी द्वितीय स्तबक, पृ. 65
19. छन्दोमंजरी द्वितीय स्तबक, पृ. 100
20. भारतपारिजातम् 13/3, पृ. 185
21. भारतपारिजातम् 21/69, पृ. 331
22. भारतपारिजातम् 21/70, पृ. 331
23. वृत्तरतनाकार 3/71
24. भारतपारिजातम 2/42, पृ. 25
25. छन्दोमंजरी, पृ. 42
26. भारतपारिजातम् 7/7, पृ. 77
27. भारतपारिजातम् 7/11, पृ. 78
28. वृत्तरत्नाकार 3/39
29. भारतपारिजातम् 24/112, पृ. 392
30. वृत्तरत्नाकर तृतीय अध्याय, पृ. 104
31. भारतपारिजातम 25/7, पृ. 395
32. भारतपारिजातम 25/17, पृ. 397
33. वृत्तरत्नागर : तृतीय अध्ययन, पृ. 94
34. भारतपारिजातम 19/79, पृ. 277
35. बलदेव उपाध्याय वृत्तरत्नाकर तृतीय अध्याय, पृ. सं. 103
36. भारतपारिजातम् 25/54, पृ. 404